eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

कहानीकार अज्ञेय

[1]दिग्विजय कुमार राय
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बी0.एस.एन.वी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, लखनऊ

Received: 10 July 2022, Accepted: 20 July 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2022

Abstract

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय एक अप्रतिम साहित्यकार इन अर्थों में थे कि उन्होंने जिस भी विधा में लेखनी चलायी, वह रचना उस विधा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुयी। प्रमुखतः कवि के रूप में प्रतिष्ठित अज्ञेय के कहानीकार व्यक्तित्व के अन्वेषित और रूपायित काने का इस शोध आलेख में प्रयत्न है।

विषय संकेतः– हिन्दी साहित्य, अज्ञेय, कथा साहित्य एवं कहानीकार अज्ञेय।

Introduction

प्रेमचन्द के बाद जिन कहानीकारों ने अपनी प्रतिभा से हिन्दी कहानी जगत् को सहसा आलोकित कर दिया था उनमें 'अज्ञेय' अग्रणी है। 'अज्ञेय' ने सामान्य मध्यवर्गीय अभिजात सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय क्रान्तिकारियों का जीवन, शरणार्थी का जीवन, पर्यटक जीवन तथा स्त्री–पुरुष के नैतिक सम्बन्धों के विश्लेषण को अपनी कहानियों का उपजीव्य बनाया है। 'अज्ञेय' के लिये प्रारम्भ से ही सन्दर्भ महत्वपूर्ण नहीं रहा है। वे व्यक्ति चरित्र की गहन संवेदना को व्यक्त करने के लिये प्रयत्नशील रहे हैं। देशकाल और सामाजिक सन्दर्भ उनकी कहानियों का प्राण तत्व नहीं है, वह केवल क्षीण आध र भूमि प्रस्तुत करता है। उनकी दृष्टि व्यक्ति वैशिष्ट्य की और केन्द्रित रही है।

'अज्ञेय' को कहानी में आधुनिकता की चुनौती को वैयक्तिक धरातल पर ही स्वीकार करने का प्रयास है, व्यक्ति सत्य के स्तर पर ही जीवन की जटिलता तथा उसके मूल्यों को व्यक्त करने का प्रयत्न है। यह कहना अनुचित होगा कि इनकी कहानी में सामाजिक चेतना का नितान्त अभाव है। इसकी बजाय यह कहना अधिक संगत होगा कि इनका कहानीकार, जीवन तथा जगत का चित्रण एवं मूल्यांकन वैयक्तिक संवेदना के धरातल पर करता है और सामाजिक मान्यताओं को भी इसी कसौटी पर परखता है। इसलिये इनकी कहानी कला प्रसाद–परम्परा से भिन्न होते हुये भी इसी कोटि में रखी जा सकती है। इसमें न तो प्रसाद को भावमूलक तथा आदर्श मूलक दृष्टि है और न ही नाट्यात्मक पद्धति। 'अज्ञेय' की कहानी कला में 'बौद्धिकता तथा मनोवैज्ञानिकता का गहरा पुट है। मनोवैज्ञानिकता का स्वरूप सुगम संगीत का न होकर शास्त्रीय संगीत का है ये मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों पर आश्रित है बौद्धिकता के विकास में भी पाश्चात्य विज्ञान तथा मनोविज्ञान का स्पष्ट प्रभाव है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का एक ऐतिहासिक संयोग ही था कि उसे 'अज्ञेय' जैसा विशिष्ट व्यक्ति मिला जो न केवल अपने निजी लेखन से ही महत्वपूर्ण रहा बल्कि साहित्य के सभी क्षेत्रों और विषयों, विधओं पर भी चिन्तातुर था। भारतेन्दु के बाद ऐसी प्रामाणिक साहित्यिक चिन्ता अज्ञेय में ही दिखलायी

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

देती है। कहानी विधा पर चलायी गयी लेखनी उसका ही एक उदाहरण है। 'अज्ञेय' ने लगभग 67 कहानियाँ लिखी, जिनमें 23 कहानियाँ श्रेष्ठ स्तर की मानी जा सकती है, और यह उपलब्धि महत्वपूर्ण है। अपनी सफल कहानियों के माध्यम से लेखक ने इस अपेक्षाकृत स्थिर माध्यम में कुछ नये दिशा–संकेत दिये हैं। 'अज्ञेय' की कहानियों का विषय भले ही बासी हो गया हो, किन्तु उनकी उपयोगिता आज भी बनी हुयी है। तत्कालीन परिवेश में उनके क्रान्तिकारी जीवन की लिखी कहानियाँ वर्तमान समय के लेखकों के लिये एक चेतना का आगाज लेकर चलती है। इसमें मनोवैज्ञानिकता व यथार्थ का मिला–जुला रूप देखने को मिलता है। 'अज्ञेय' ने अपना लेखन कहानी से शुरू किया, उनकी पहली कहानी 'जिज्ञासा' 1929 में लिखी गयी और 1935 में प्रकाशित हुयी। अतः उनके कहानी लेखन का आरम्भ 1929 से माना जा सकता है। उनकी कहानियों को विषय के आधार पर विभिन्न वर्गों में रखा जा सकता है।स्वयं अज्ञेय के अनुसार पहली खेप को कहानियाँ क्रान्तिकारी जीवन की है।

क्रान्ति समर्थन की है और क्रान्तिकारियों को मनोरचना और उनकी कार्य–प्रेरणाओं के बारे में उभरती शंकाओं की है।'अज्ञेय' की प्रारम्भिक दौर की कहानियों का एक प्रमुख विषय क्रान्ति था। कालक्रम के अनुसार अकलंक (1931 सितम्बर), विपथगा (1931 सितम्बर), हारिति (1931 अक्टूबर), द्रोही (1931 अक्टूबर) मिलन (1931 दिसम्बर) अभिशापित (मुलतान जेल 1932), एक घण्टे में (1932 मई), क्षमा (1935 मई) अंगोरा के पथ पर (1933 मई) पंगोडा वृक्ष (अक्टूबर 1933) एकाकीतार (1933 अक्टूबर), कैसांड्रा का अभिशाप (1933 दिसम्बर), शत्रु (1935 जून) कुली को सीटी (मार्च 1938), पुरुष का भाग्य (1940 जनवरी) कहानियों में क्रान्ति या तो केन्द्र में है या हाशिये पर इनसे क्रान्ति सम्बन्धी लेखक को भिन्न दृष्टियों का या दृष्टि में आये बदलाव का परिचय भी प्राप्त होता है।'अज्ञेय' कान्तिकारी थे और क्रान्ति, वीरता, पौरूष, निर्भयता, साहस, पराक्रम, निश्चयात्मक दुदता, आदर्शोन्मुखता, मनुष्य को उगामी वृति, बलिदान का उत्साह, ओदात्य के प्रति निष्ठा और समर्पण जैसे दवा और मदाय धर्म के प्रति उनके मन में आरम्भ से अक्षर आकर्षण रहा है।

अकलंक (दिल्ली जेल 1931 सितम्बर) कहानी इसी मानसिकता की उपज है। 'विपथगा', मिलन, हारिति, अकलंक, अभिशापित, कैसांदा का अभिशाप, पगोड़ा वृक्ष, शत्रु ये कहानियाँ हिन्दी की ही नहीं वरन् पश्चिम जगत् की कहानी से भी समतुल्यता करने वाली हैं व निश्चय ही हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है। 'बंदी जीवन ने कैसे खुद को तपाया निखारा तो कुछ को तोड़ा भी, इसका बढ़ता हुआ अनुभव उस आरम्भिक आदर्शवादी जोश को अनुभव का ठंडापन और सन्तुलन न देता, यह असम्भव था और सन्तुलित वांछित भी क्या नहीं था। बंदी–जीवन जहाँ संचय का काल था, वहाँ कारागार मेरा 'दूसरा विश्वविद्यालय' भी था।'अज्ञेय' स्वयं जेल में अनेक वर्षों तक रहे, जेल जीवन की यातनाओं से वे परिचित रहे, परन्तु कहानी में बाह्य यंत्रणाओं, खानपान की असुविधओं, मानसिक ऊब इत्यादि का वर्णन करने की अपेक्षा 'अज्ञेय' मनुष्य के मन की ऊर्जा और संकल्प शक्ति पर बल देते हैं। छाया (अक्टूबर 1931) विवेक से बढ़कर (मई 1932) कडिया (नवम्बर 1933) कोठरी की बात (दिल्ली जेल 1934) – नम्बर दस (मार्च 1957) दरोगा अमीन चन्द (मार्च 1938) बंदी जीवन की कहानियाँ है। जेल –– सम्बन्धी इन कहानियों को पढ़ते समय लगता है कि 'अज्ञेय' मनुष्य को तोड़ने

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

वाली स्थितियों की अपेक्षा उसे निखारने वाली अवस्थाओं, मनुष्य को सम्भावनाओं पर, उसकी आत्मिक ऊर्जा पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।

'अज्ञेय' ने युद्ध में भर्ती होकर सैनिक जीवन का अनुभव भी लिया था। अतः क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित उनकी कतिपय कहानियों में जहाँ सैनिक जीवन का अंकन हुआ है वहाँ यथार्थ की चाक्षुष प्रतीति मिलती है। 'अज्ञेय' की दो कहानियाँ विशेष महत्वपूर्ण है–मेजर चौधरी की वापसी (1947) और 'नागा पर्वत की एक घटना' (दिसम्बर 1950) दोनों कहानियों में सैनिक जीवन के प्रत्ययकारी है, और विलक्षण करुणा दोनों में सूत्रवत् प्रवाहित है। बाह्य चित्रण 'अज्ञेय' ने 1947 में इलाहाबाद में विभाजन से सम्बन्धित पाँच कहानियाँ लिखो। 'लेटर बाक्स' 'अज्ञेय' को एक महत्वपूर्ण कहानी है 'शरणदाता' कथ्य एवं तकनीक की दृष्टि से 'अज्ञेय' को सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिनी जा सकती है, विभाजन के बाद मानवीय त्रासदी की क्रूरता और मानवीय मूल्यों के छिपे अंकुरों को सशक्त अभिव्यक्ति को विलक्षण, संतुलित कहानी है 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई–भाई' का स्वर व्यायात्मक है, और डर एवं डर से उत्पन्न अनेकानेक मानसिक बीमारियों का संकेत यह कहानी करती है। 'रमन्ते तत्र देवता' हिन्दू धर्म वालों की मानसिकता पर यह व्याख्यात्मक प्रहार करने वाली है। 'बदला' कहानी साम्प्रदायिकता का एक अलग पहलू प्रकट करती है।

'अज्ञेय' की कहानियों में मनोवैज्ञानिक तथ्य इतने प्रचुर रूप में मिलते हैं कि विशुद्ध मनावैज्ञानिक कहानी के रूप में कुछ को अलग करना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि 'अज्ञेय' मनुष्य के मानस की पहचान करने वाले साहित्यकार है, फिर भी कुछ कहानियों को रेखांकित करना आवश्यक 'जान पड़ता है। 'अज्ञेय' को अलका जैसी कहानियों में मनोवैज्ञानिक तथ्य है, ग्रीन, अतिखित कहानी, शान्ति हंसी सौ. पगोड़ा वृक्ष, सिगनंतर, अछूते फूल, सेब और देव, वे दूसरे, साय, हीली बोन की बतखें, कहानियाँ मनोवैज्ञानिक कोटि में रखी जाती हैं। 'अज्ञेय' की कहानियों में मनोविज्ञान अधिक नहीं है। 'अज्ञेय' की यथार्थ की अवधारणा व्यापक थी। वे मानते थे कि यथार्थ अगर यथास्थिति की अर्थवान प्रस्तुति है तो वह विषय सापेक्ष ही होगी उसी तरह आदर्श भी उस यथार्थ का ही अंश है। 'अज्ञेय' ने साहित्य के अन्तर्गत आदर्शवाद को कभी अवहेलना की दृष्टि से नहीं देखा। आदर्श मनुष्य के स्वभाव में निहित ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति का उन्मेष है।

'अकलंक' कहानी में समूची क्रान्ति का आन्दोलन ही इस अथर्वगामी प्रवृत्ति का परिणाम था 'जयदोल' कहानी में 'जयमती' की अपार सहनशीलता और बृढ़ता इसी कथर्वगामी प्रवृत्ति का परिणाम है।'अज्ञेय' ने सामान्य जीवन की अनेकांगी तस्वीरें खींची है। रोजमर्रा जीवन की नीरसता के साथ, इसी जीवन में छोटे–छोटे प्रसंगों में रस लेने वाले जिजीविषा से भरे पूरे और मानवीय मूल्यों के संस्कारों को जीने वाले, जाने–अनजाने भौतिक सुविधाओं को तरजीह देने वाले अकिंचनों का संसार पाठक को अकिचन जीवन को जीवन–शक्ति का बोध कराता है। इसमें मृत्यु की ओर उन्मुख मध्यवर्गीय चेतना भी है, जो मिट्टी से जीवन–रस खाँचकर पनपने वाले अति सामान्य वर्ग के लोग हैं। 'अकलक' जिजीविषा देवीसिंह, नारगिया, नितिन बाबू, शान्ति हंसी थी, दस नम्बर, एकाकी तारा, गृह त्याग, पहाड़ी जीवन, सूक्ति और भाष्य, 'हजामत का साबुन' व रोज' आदि कहानियाँ 'अज्ञेय' की रोजमर्रा जीवन की प्रवृत्तिगत विशेषताओं से युक्त है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

'अज्ञेय' मुख्यतः कवि हैं और उनकी कवि दृष्टि से उनके कथा साहित्य को अपरिसीम लाभ पहुँचा है। कहानी ही नहीं उनके उपन्यास भी कवि दृष्टि से आलोकित हुये हैं। कहानियों में 'सांप' (अक्टूबर 1950) एक काव्यात्मक कहानी है, 'मनसो' (दिसम्बर–1934) एक रोमाण्टिक कहानी है। 'अज्ञेय' ने काव्य की प्रक्रिया, काव्य का स्वरूप, काव्य और पाठक, काव्यानुभव का प्रभाव इत्यादि महत्वपूर्ण साहित्यिक समस्याओं का चिन्तन काव्य के माध्यम से प्रचुर रूप में किया है। कुछ कहानियाँ के माध्यम से भी उन्होंने यह चिन्तन किया है। यथार्थ और कला कलाकार का व्यक्तित्व, उसको करता और यथार्थ के अन्तर सम्बन्ध, कलाकार को स्वतन्त्रता इत्यादि प्रश्न 'अज्ञेय' के लिये बहुत ही आत्मीय रहे हैं।

कहानी के स्वरूप की सुरक्षा करते हुये इन चिनानपरक समस्याओं की सोच एवं कहानी के माध्यम से खोज एक अतिशय जटिल चुनौती है, जिसे 'अज्ञेय' ने अनेक कहानियों में समर्थता से 'निभाया है। 'अज्ञेय' की अजस्र मेधा का यह द्योतक है।'जिज्ञासा' 'अज्ञेय' की पहली कहानी है, जो 1929 में मूलरूप में लिखी गयी थी और प्रकाशित 1935 में हुयी। मनुष्य के आदिमकाल के जीवन के प्रति 'जिज्ञासा' 'अज्ञेय' में पायी जाती है। एक दार्शनिक के रूप में नहीं, एक साहित्यकार के रूप में कोई जिज्ञासु, मूलभूत प्रश्नों से कैसे टकराता है, इसका 'जिज्ञासा' कहानी एक सशक्त उदाहरण है।

'अज्ञेय' ने अनेक कहानियाँ आत्मकथन प्रणाली के माध्यम से प्रस्तुत की है। 'द्रोही क्षमा, गैग्रोन, चिड़ियाघर, लेटर बक्स, मेजर चौधरी की वापसी, देवीसिंह, हजामत का साबुन, नितिन बाबू, सांप कलाकार को मुक्ति' आत्मकथात्मक नजरिये की भिन्नता पर तथा उसकी कथ्य के साथ संगति पर अच्छा विचार हो सकता है। 'कोठरी की बात' का शिल्प भी आत्मकथात्मक है। 'अज्ञेय' की कुछ कहानियाँ किसी विशिष्ट क्षण के सार्थक होने की अनुभूति की कहानियाँ है। ताज की छाया में, पगोड़ा वृक्ष, इन्दु की बेटी में इस विशेषता का दर्शन होता है। 'अज्ञेय' ने कहानियों के बीच यदा–कदा व्यंग्य अवश्य किया है, और जहाँ किया है वहाँ वजनी भी है, परन्तु व्याय उनके लेखक में कभी प्रमुख स्वर नहीं बना। 'चिड़ियाघर' उनकी सफल सशक्त, व्यंग्यात्मक कहानी है। व्यंग्यात्मकता का स्वर हमें 'सभ्यता का एक दिन' व हजामत का साबुन में भी देखने को मिलती है।

'अज्ञेय' की कलात्मक पकड़ साहित्य विधा के रूप पर मजबूत है, इसे प्रायः सब स्वीकार करते हैं। 'अज्ञेय' की कहानियाँ रूप एवं प्रयोग की दृष्टि से भी विश्लेषणीय है। फिर भी 'अज्ञेय' केत रूपवादी या कलावादी या प्रयोगवादी उस अर्थ में नहीं है, जिस अर्थ में उन्हें कुछ समीक्षक मानते बाद हैं। वे साहित्य को ज्ञान का एक प्रकार मानते हैं, मनुष्य की बुद्धि और मानस का संस्कार करने का उसका प्रयोजन स्वीकार करते हैं, स्वभावतः कला के आशय को अत्यधिक महत्व देते हैं, परन्तु आशय को अर्थात् अनुभवाशय को सही रूप में सम्प्रेषित करने के लिये और एक कला–वस्तु के सम्प्रेषण के लिये रूप, प्रयोग एवं शिल्प के प्रति दक्षता को भी अत्यावश्यक मानते है।

'अज्ञेय' को किसी भी कहानी को उठाकर संरचना की दृष्टि से देखा जाये तो प्रभाव को एकोन्मुख उत्कृष्ट इंटेसिटी बढ़ाने का प्रयास दिखता है। जो कहानियाँ इससे कुछ शिथिल पड़ गयी हैं कला की दृष्टि से असफल है और निबन्ध के आस पास बैठती है। ऐसी कहानियाँ है वत्सरी' कोठरी की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

बात, द्रोही..... इनकी आत्मकथात्मक वर्णन प्रणाली के बावजूद एकाग्रता नहीं 'अमर हो पायी है। इसी तरह एक घण्टे में 'एकांकी तारा, हर सिंगार, नीली हंसी' जरूरत से ज्यादा फैल गया है।

'अज्ञेय' ने पहली कहानी 'जिज्ञासा' में ही तथाकथित कथावस्तु पर दो–तीन प्रकार से आक्रमण किये हैं। यह मनोरंजन के लिये लिखी हुयी कहानी नहीं है, और इसकी सृष्टि रचना, ईश्वर, साप, पुरुष स्त्री आदि बातों को देखकर इस प्रकार की फत्तों करना कि यह पंचतन्त्र का रूप विध न है, कहानी आधुनिक और नये रूप विधान के प्रति अनभिज्ञता का प्रदर्शन है।

''अक्षय अपनी कहानी में मुख्यतः क्या देते है? निश्चय ही जीवनानुभव का मालिक, अप्रतिम विशिष्ट और महत्वपूर्ण रूपध्सामान्य जन जीवन से सम्बन्धित जिजीविषा, देवी सिंह, नारंगिया, नितिन बाबू आदि कहानियों के माध्यम से 'अज्ञेय' यथार्थ को केवल दर्पण नहीं देते, इन चरित्रों में निहित मज दुर्द्धर्व जिजीविषा को अर्थात् विशिष्ट महत्वपूर्ण जीवनानुभव को सम्प्रेषित करते हैं। वैसे देखा जाये तो उनकी प्रायः सभी कहानियों में सामान्य मध्यवर्ग ही है। दुर्भाग्य से सामान्य जीवन में अनुस्यूत असामान्यता या रोजमर्रा के जीवन में परिलक्षित होने वाली असाधारण की ओर देखने की दृष्टि ही धुंधली पढ़ने के कारण अज्ञेय' के कथा–साहित्य पर अभिजात वर्ग से सम्बद्ध होने का मिथ्या आरोप लगाया जाता है। उनके क्रान्तिकारी असामान्य है, परन्तु क्या वे अभिजात वर्ग के हैं? इस दृष्टि से अज्ञेय' के कथा–साहित्य को पुनः देखा जाना आवश्यक है, क्योंकि उनकी एक भी कहानी में ऐसा चरित्र नहीं है। सामान्य मनुष्यों और सामान्य घटनाओं को अपने चिन्तन के द्वारा क्षणभर के लिये न' अज्ञेय' असाधारण जरूर बना देते हैं। 'हरसिंगार' के अनाथ आश्रम का गोविंद हो या जिजीविषा की ंतिंज बातरा होली बोन को बतखें, की होली बोन भी मूल में ऊंचे वर्ग की होते हुये भी सामान्य जीवन बिताने को बाध्य है। यह अवश्य ही इन सामान्यों के जीवनानुभव का असाधारण क्षण दम) अज्ञेय' ने पकड़ा है।

'अज्ञेय' एक महान भाषा प्रभु है और उन्होंने हिन्दी को भाषिक दृष्टि से विलक्षण समृद्ध बनाया है इसमें दो मत नहीं है। ''वैविध्य समृद्धि, विलक्षण कसाव, अल्पाक्षरत्व आशयानुकूल भगिमा, काव्यात्मकता 'अज्ञेय' की गद्य–भाषा के कुछ महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य है।'' 'अज्ञेय' कवि हैं, उनकी भाषा आवश्यकता पड़ने पर विलक्षण बिम्बधर्मी बनती है। 'अमरवल्लरी' जैसी संवेदना समृद्ध कहानी की शक्ति विम्वधर्मी भाषा का प्रयोग ही है। चरित्रों की मानसिकता का संकेत करते समय जिस तरह 'अज्ञेय' की भाषा भावात्मक झिलमिलाती पर्त लेकर व्यक्त होती है, उस तरह चरित्रों की शारीरिक हलचल स्पन्दनों का भी चित्रवत् रेखांकन के करते हैं।

नयी कहानी की उत्साहपूर्वक चर्चा के दौरान यह भी दावा किया गया कि नयी कहानी ने कहानी को भाषा को भी बदला है। वस्तुतः यह दावा तभी सही माना जा सकता है, जब अज्ञेय, जैनेन्द्र, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश की कहानियों का भाषा का दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जाय। आज तो यही लगता है कि क्या कहानी प्रवर्तकों द्वारा किये गये तत्वों की वस्तुनिष्ठ जाँच अभी आवश्यक है और 'अज्ञेय' की कहानी भाषा के सन्दर्भ में उसे किया जाये तो 'अज्ञेय' को परम्परा से सम्भवतः नयी कहानी की भाषा को जोड़ना होगा।1931–1950 अवधि के हिन्दी कहानी के इतिहास में

'अज्ञेय' का कभी न मिटने वाला स्थान है। कथ्य की नवीनता के साथ–साथ कहानी के शिल्प और भाषा सम्बन्धी प्रयोग उनकी सर्जनात्मकता को एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान करते हैं।

प्रेमचन्दर हिन्दी कहानी को 'अज्ञेय' द्वारा एक नई दिशा के अन्वेषण का श्रेय दिया जाना चाहिये। प्रेमचन्द और उनके समकालीन कहानीकारों की इतिवृतात्मकता और वर्णन बहुलता के बीच ''अमर बल्लरी' और 'पगोड़ा वृक्ष' जैसी कहानियों की उपस्थिति जिस नये रचनात्मक उन्मेष का संकेत लेकर आयी होगी, उसका अनुमान लगा पाना कठिन नहीं है। सांकेतिकता का प्रभाव एवं सघनता की दृष्टि से गैंग्रीन, होली बोन की बसों और जयदोल भी उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ है 'अज्ञेय' ने अपनी अनेक कहानियों में पत्र और डायरी शैली का प्रयोग किया है। कहानी को वे एक क्षण की जीवन स्थिति का सत्य एक दौड़ती हुयी लहर का गतिचित्र....... कहकर परिभाषित करते हैं। इन स्थितियों के लिये प्रायः वे प्रतीक विधान का सहारा लेते हैं। इसमें कहानी में अमूर्तन का आग्रह बढ़ता है और दुर्बोधता से बच पाना कठिन होता है। सांप, पठार का धीरज और कलाकार की मुक्ति आदि कहानियाँ इस अमूर्तन की प्रवृत्ति के प्रतिनिधि उदाहरण है।

.... यह निश्चयतः कहा जा सकता है कि 'अज्ञेय' का कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी दोनों) प्रसाद एवं प्रेमचन्द तथा उनके अनुवर्ती अन्य कथाकारों के कथा–सृजन से श्रेष्ठतर स्थिति में है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, भगवतीशरण वर्मा आदि आधुनिक कथाकार अवश्य ऐसे हैं, जिनकी कहानियाँ और उपन्यासों के समान्तर रखे जा सकते हैं। वास्तव में तो 'अज्ञेय' इन्हीं की कथा–परम्परा के लेखक हैं, किन्तु 'अज्ञेय' की सृजनकर्मी प्रतिभा ने उनकी कथा–रचनाओं को सबसे विशिष्ट स्थिति में उपस्थित कर दिया है।

'अज्ञेय' की कथा–कृतियों– क्या उपन्यास और क्या कहानियों में, न तो कहीं दार्शनिकता की अतिव्याप्ति है और न मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रति दुराग्रह। वह अपने सम्पूर्ण कथा सृजन के सन्दर्भ में सर्वथा एवं सर्वदा मौलिक है।'' अत्यन्त निश्चयात्मक स्वर में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य में 'अज्ञेय' का स्थान एक मौलिक प्रवर्तक तथा सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रूप में शीर्ष स्थान पर अक्षुण है और रहेगा।

सन्दर्भ सूची–

- इन्द्रनाथ मदान, कहानी की कहानी, पृ०सं०–20 (रामचन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1996)
- राजपाल, 'अज्ञेय' सम्पूर्ण कहानियाँ, पृ०सं०–19–20 (रामचन्द्र एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली)
- उपरिवत् पृ०सं० – 20
- चन्द्रकान्त म० यादिवडेकर, कथाकार अज्ञेय, पृ०सं० 216 (हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़))
- उपरियत् पु०सं० 220
- मधुरंश, हिन्दी कहानी का विकास, पृ०सं० 46 (लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)